राष्ट्रवाद के परिप्रेक्ष्य में 'रंग दे बसन्ती चोला'

संगीता सदानन्दन

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग
कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय

वर्तमान समय में राष्ट्रवाद चर्चा का विषय बन गया है। राष्ट्रवाद को सही अर्थों में परिचित कराने की आवश्यकता बढ़ गयी है। वास्तव में राष्ट्रवाद एक आधुनिक अवधारणा है। एक ही सामाजिक परम्परा और संस्कार से युक्त जनता में स्वाभाविक रूप से राष्ट्रवाद का बोध होता है। राष्ट्रवादी भावना के भीतर राष्ट्रप्रेम, एकता, समानता एवं मानव-मूल्यों का खास महत्त्व होता है। विचारकों के मत में यह एक भावनात्मक शक्ति है। राष्ट्रीय व्यक्तित्व की सुरक्षा तथा राष्ट्रवाद की भावना का विकास ही राष्ट्र का कर्तव्य है। प्रो० ग्रास के अनुसार, ''राष्ट्रवाद एक प्रकार की सामूहिक भावना है, जिसका आधार विभिन्न प्रकार की एकताएँ व समानताएँ हैं जिनका सम्बन्ध प्रधानत: राजनीतिक शक्ति की प्राप्ति या विकास से है।''[1] राष्ट्रवाद एक राजनीतिक भावना एवं ऐतिहासिक प्रक्रिया है। प्रो० ए०डी० आशीर्वादम का मानना है कि ''अनेक विचारक राष्ट्रवाद के बहुत बड़े प्रशंसक और भक्त हैं। वे इसमें अच्छाइयाँ ही पाते हैं। पर दूसरे लोगों का कहना है कि राष्ट्र-वाद अपने वर्तमान रूप में अंतर्राष्ट्रीय शान्ति और सद्भावना का सबसे बड़ा शत्रु है।''[2] लेकिन धर्म के आधार पर राष्ट्रवाद को देखने पर ही समस्याएँ उत्पन्न होती

हैं। वरना मूलरूप में राष्ट्रवाद मनोविकारमय राजनीतिक धारणा है। इसमें अतीत परम्परा के प्रति आदर, देशभक्ति, एकता एवं समानता की भावना भी समाहित है। राष्ट्रवाद किसी भी जनसमूह को अपने राष्ट्रत्व की पूर्ण प्राप्ति के लिए सहायक है।

वर्तमान भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म राजनीतिक अस्वतन्त्रता के दिनों में अंग्रेज़ी शासन की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ था। 1920 ई० में हिन्दी साहित्य में राष्ट्रवाद का विकास दिखाई देता है। उसी समय साहित्य के जरिए जनता में राष्ट्रवाद का विकास होने लगा। इसके माध्यम से देशवासियों में उत्साह आत्मगौरव और स्वाभिमान की भावना का उदय हुआ। साहित्य में राष्ट्रवाद का चरम विकास गाँधी के प्रभाव के कारण हुआ था। उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों से प्रभावित होकर राष्ट्र-चेतना का प्रचार करना अपना कर्तव्य माना और राष्ट्रमुक्ति का प्रयास किया।

हिन्दी नाट्य जगत में भीष्म साहनी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपनी रचनाओं में अपने समय की जरूरतों और चुनौतियों का चित्रण किया है। भीष्म जी के 'रंग दे बसन्ती चोला' नाटक में जलियाँवाला बाग हत्याकांड को आधार बनाया है। साथ ही तत्कालीन देश की राजनैतिक एवं सामाजिक समस्याओं को भी प्रस्तुत किया गया है। यह नाटक प्रत्येक भारतीय के मन में जोश एवं देशभक्ति की भावना को जगाता है। इसमें राष्ट्रवाद की भावना अनेक मायनों में अभिव्यक्त हुई है– देश की दुर्दशा, देशद्रोहियों का आक्रमणकारियों से गठबन्धन, आन्तरिक फूट आदि के रूप में, जातीय गौरव की भावना से संपन्न कष्ट-सहिष्णु बलिदानों द्वारा, राष्ट्रीय संगठन, साधन संग्रह, शत्रु के विरुद्ध संगठित अभियान, आततायियों की पराजय, न्याय के आधार पर पुन: दृढ़ शासन की स्थापना के निरूपण में और देश के सांस्कृतिक गौरव के प्रति स्वदेश-विदेश के भावकों द्वारा प्रशंसा, स्नेह, श्रद्धा की अभिव्यक्ति के रूप में।

अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करते हुए भारतीयों ने व्यापक स्तर पर राष्ट्र-प्रेम का परिचय दिया था। इसलिए अधिकांश विद्वानों का मानना है कि राष्ट्रवाद का जन्म स्वतंन्त्रता आन्दोलन के दौरान ही हुआ है। इस नाटक में ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष करने वाले, विरोध प्रकट करने वाले भारतीयों का चित्रण किया गया है। सत्यपाल, किचलू, किश्ना, हेमराज, सरदार सोहन सिंह आदि पात्रों में विदेशी दमन शासन से राष्ट्र को मुक्ति दिलाने की गहरी इच्छा विद्यमान है। इसके लिए वे अपना सर्वस्व राष्ट्र के लिए समर्पित करता है। स्वाधीनता आन्दोलन में भारतीय जनता अपना सब कुछ समर्पित करने के लिए तैयार थी। वे अपने राष्ट्र की रक्षा करना चाहती थी। इसे व्यक्त करने वाला इर्विंग का कथन इस प्रकार है– ''जो आन्दोलन में हिस्सा ले रहे हैं ...तन-मन से जुड़ा हुआ है।''[3] इर्विंग की बातों से स्पष्ट होता है कि अमृतसर का व्यापारी दूकान बन्द कर आन्दोलन में भाग ले रहा

है। वह छः अप्रैल को हड़ताल करने वाला है, सात अप्रैल को रौलट एक्ट के विरुद्ध मूवमेंट करनेवाला है। हर तरफ से भारतवासी गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रमुक्ति का प्रयास कर रहे थे। इसी हालत का चित्रण करके भीष्म जी ने प्रत्येक भारतवासी के मन में राष्ट्रप्रेम की उदात्त भावना को जागृत कराने का प्रयास किया है। राष्ट्रप्रेम या जन्मभूमि के प्रति प्रेम मानव-प्रेम से होता है। हमारे भारत में पहले से ही देशप्रेम की भावना विद्यमान रही। इर्विन के शब्दों से यह व्यक्त होता है– ''पंजाब की महान जनता के देश-प्रेम में इन्हें गहरा विश्वास है।'' और माइकल ओडवयर के शब्दों में– ''मेरी सरकार को पंजाब के लोगों पर नाज है और यह सच्चा नाज है। महायुद्ध के लिए पंजाब की देन की चर्चा मैं जगह-जगह करता रहा हूँ।''[4] इससे स्पष्ट होता है कि पंजाब की जनता लगन से राष्ट्रमुक्ति का प्रयास कर रही थी। पूरे भारतवासी के मन में राष्ट्रप्रेम की महान भावना जागृत हो रही थी। गांधीजी के प्रभाव से राष्ट्रवादी भावना जनमानस में विकसित हुई। यहाँ भीष्म जी ने राष्ट्र सेवा की महिमा को उजागर किया है और बताया है कि राष्ट्र को मुक्ति दिलाना, स्वतन्त्र बनाना और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य निभाना प्रत्येक नागरिक का प्रथम दायित्व है। यह राष्ट्रवादी भावना को विकसित करता है।

राष्ट्रवाद के मूल में मैत्री, एकता, करुणा एवं सद्भावना का तत्त्व जुड़ा हुआ है। स्वाधीनता आन्दोलन के कारण ही राष्ट्रवाद का उदय हुआ था। इसी संघर्ष ने भारत की विभिन्न जनता को एक धागे में बाँध दिया। इसे व्यक्त करने वाला माइकिल ओडायर का कथन है कि ''...हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच मेल-मिलाप शुरू हो गया है।''[5] स्वतन्त्रता संघर्ष ने धर्म, मजहब, क्षेत्र और वर्ग-भेद को मिटाकर भारतीयों को एक कर दिया है। यह विदेशी शासकों के लिए खतरा बन गया था। नाटक का एक सन्दर्भ इस प्रकार है कि–

''ओडायर : ...यह रामनवमी तो हिन्दुओं का पर्व है न?

प्लोमर : ...इस बार वे लोग इसे कौमी एकता दिवस के रूप में मना रहे हैं। मुसलमान भी इसमें शामिल हो रहे हैं।

ओडायर : वे खुलेआम एक-दूसरे से बगलविर होंगे, मेलजोल बढ़ायेंगे...।

प्लोमर :...हिन्दू-मुसलमान एक ही प्याले में से पानी पी रहे थे...।''[6]

इस प्रकार की एकता धर्मनिरपेक्षता और सहृदयता आदि तत्त्व राष्ट्रवादी भावना के मूल बिन्दु हैं।

गांधी जी ने अहिंसा को देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन का अस्त्र बनाया। राष्ट्रवाद के मूल में भी अहिंसा भाव निहित है। इसी अहिंसा को भीष्म जी ने 'रंग दे बसन्ती चोला' में महनीय स्थान प्रदान किया। रौलट एक्ट के विरुद्ध नारे लगाते वक्त एक भाषणकर्ता कहता है कि– ''हम अपनी जायज माँगों के लिए आवाज उठायेंगे, हर

तरह की कुर्बानियाँ देंगे। लेकिन हम पुलिस को या अफसरशाही को कोई नुकसान नहीं पहुँचाना चाहते।''[7] कोई और कहता है कि ...घर आये मेहमान पर कोई हाथ नहीं उठाता।''[8] गांधी के बयान। अपने ताजे बयान में उन्होंने कहा है कि हिन्दुस्तान के लोग ब्रिटिश सरकार के साथ वैसा ही बर्ताव करेंगे, जैसे प्रह्लाद ने अपने पिता के साथ किया था। प्रह्लाद एक पौराणिक पात्र है। प्रह्लाद ने अपने पिता के हुक्म मानने से इनकार कर दिया था, पर साथ-ही-साथ उसके दिल में अपने पिता के प्रति कोई दुर्भावना नहीं थी।''[9] प्लोमर के इन शब्दों से भी भारतीय जनता का अहिंसावादी दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। भीष्म जी ने प्रस्तुत नाटक में भले ही जलियाँवाला बाग हत्याकांड की भीषणता को दिखाया है। उन्होंने संसार के सामने अहिंसा की अहमियत को उजागर किया है। भीष्म जी बताना चाहते हैं कि अस्वतन्त्रता के समय में, दमन और हत्याकांड के बावजूद भारतीय जनता संयम से स्वतन्त्रता की माँग कर रही थी। गांधी जी ने जनमानस में राष्ट्रवादी भावना का बीज बोया और राष्ट्रहित के लिए अहिंसा को स्थापित किया।

प्रस्तुत नाटक में भीष्म जी ने राष्ट्रस्नेही चरित्रों के चित्रण द्वारा राष्ट्रवादी भावना का प्रचार किया है। हेमराज एक सशक्त राष्ट्रभक्त चरित्र है जिसका मूल उद्देश्य राष्ट्र को मुक्ति दिलाना है। उसने अपना सर्वस्व राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया है। वह अपना काम छोड़कर सदा राष्ट्रमुक्ति के प्रयास में जुड़ा रहता है। वह कहता है कि– ''लोगों ने अपनी दूकानें बंद कर दीं। वाह, मैं और महाशय देवराज बाजार में गये। बाजार पहले से बन्द। ओ मैं कुरबान जाऊँ, अमृतसरियो तुमने कमाल कर दिया।... कल सात अप्रैल है। कल से सत्याग्रह शुरू होगा। कल देख, सारा शहर नहायेगा। हर अमृतसरिया स्नान करेगा। सत्याग्रह की शपथ जो लेंगे। ...सुच्चे मुँह, नहा-धोकर शपथ लेंगे।''[10] इससे व्यक्त होता है कि हेमराज स्वतन्त्रता आन्दोलन में सभी लोगों को भाग लेते देखकर बहुत खुश है। वह अपनी पत्नी रतन देवी को भी राष्ट्रमुक्ति के प्रयास में शामिल कराना चाहता था– ''तू भी मेरे साथ चलाकर... तुझे बहुत अच्छा लगेगा। तेरा कंठ अच्छा है। प्रभातफेरी में तू गाया करना।'' हेमराज अहिंसा पर विश्वास करने वाला, गांधी से प्रभावित जवान है। रतन देवी का भाई सरदार सोहन सिंह ने राष्ट्रमुक्ति के लिए, अंग्रेज़ों को भगाने के लिए बम का निर्माण किया था। सरदार अहिंसा और सत्याग्रह का विरोधी है क्योंकि उनका मानना है कि इससे कुछ बदलाव नहीं होगा। वह पूछता है– ''तुम जो इंकलाब करने जा रहे हो! चरखा कातो, नारे लगाओ, हड़तालें करो, मुल्क आजाद हो जायेगा।''[12] इसके बदले हेमराज जवाब देता है कि– ''पर तुमने बम बनाकर कौन-सा अंग्रेज़ों को भगा दिया है।''[13] यहाँ सच्ची राष्ट्रवादी भावना को हेमराज के जरिए अभिव्यक्त किया गया है। सरदार राष्ट्रभक्त एवं धीर व्यक्ति है। उसने फिरंगियों का डटकर विरोध किया

है। अपने साथियों को गोली लगते देखकर भी वह पीछे नहीं हटता। उसमें लड़ने की, बुराई का विरोध करने का जोश भरा हुआ है। उसका मानना है कि– ''देश को आजाद करना हो तो ऐसे ही होगा। जान हथेली पर रखकर। चरखा कातने से, नारे लगाने से कुछ नहीं होगा...। चिट्ठियाँ लिखने से देश को आजादी मिलेगी? देश को यतीमखाना बनाकर छोड़ेगा।''[14] यहाँ भीष्म जी ने देशप्रेम और शूरता का नमूना प्रस्तुत किया है।

किश्ना जो 8-9 साल का लड़का है वह भी स्वतन्त्रता संग्राम में भाग ले रहा है। वह समझता है कि राष्ट्रमुक्ति की आवश्यकता कितनी है और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य क्या है। वह गली-गली गाना गाकर घूमता है–

''जरा वी लगन आजादी दी
लग गयी जिन्हां दे मन दे विच
ओह मजनू बण फिरदे ने
हर सेहरा, हर वन दे विच।''[15]

किश्ना गांधी के विचारों से प्रभावित था। वह वर्दी पहनता है और झंडा लेकर नारा लगाने लगता है कि ''हिन्दू-मुसलमान की जय, भारतमाता की जय! महात्मा गांधी की जय!''[16] अन्त में किश्ना और हेमराज को गोली लगती है दोनों राष्ट्रमुक्ति के लिए शहीद हो जाते हैं।

रतन देवी और ईशरो ये दोनों स्त्री पात्र अपने व्यवहार से राष्ट्रप्रेम का आदर्श उपस्थित करते हैं। राष्ट्र के लिए, मुल्क की आजादी के लिए अपना पति भी सहयोग दे यही उनकी इच्छा है। ईशरो कहती है कि ''किसी को दंगल देखने का अमल, किसी को मुल्क की आजादी की अमल। अब तो मेरा घरवाला भी रोज जलियाँवाला बाग में ही जाने लगा है।''[17] रतन देवी भी कहती है कि 'अब तो मैं भी खिड़की में बैठी भाषण सुनती रहती हूँ।''[18] हेमराज गोलियों का शिकार हो जाता है तो रतन उसे ढूँढ़ने निकलती है। और खून से लथपथ शव शरीर के पास पहुँचती है। रतन कहती है कि ''तू कहा करता था मत डरा कर, यह जिन्दगी जीने के लिए नहीं है, यह तो झूल जाने के लिए है। और तू सचमुच झूल गया। तू तो नाचता-गाता हुआ चला गया।''[19] किश्ना को भी मृत्यु वरण करते देखकर रतन कहती है कि ''तू भी भगवान के पास जा रहा है। मैं रोऊँगी नहीं। मैं तेरा सफर खराब नहीं करूँगी। ...तेरे सैकड़ों साथी मौत की नींद सोये पड़े हैं। वे भी तेरे साथ भगवान के दरबार में जायेंगे।''[20] रतन देश के लिए कुर्बानी देने की अहमियत को समझती है। राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध, प्रेम, भक्ति रतन में निहित है। राष्ट्र के लिए पति की कुर्बानी पर स्वयं को चिर-सुहागिन मानने वाली रतन निश्चय ही भारतीय नारी का उच्चादर्श प्रस्तुत करती है। साथ-ही-साथ स्त्री पुरुष से किसी बात में पीछे नहीं है, इसी बात का प्रमाण प्रस्तुत

करती है। यह भी ध्यान देने की बात है कि राष्ट्रवादी भावना के तहत भी स्त्री-पुरुष की समानता पर बल दिया गया है।

इस नाटक में वाथुर एक ऐसा पात्र है जो अंग्रेज़ होकर भी भारत का साथ देता दिखाई देता है। वाथुर की बातों के जरिए भीष्म साहनी ने अंग्रेज़ी शासन के तब तक की दमन नीति का उल्लेख किया है। प्रत्येक देशवासी के सामने तत्कालीन राष्ट्र की हालत का चित्र प्रस्तुत किया गया है। वाथुर कहता है कि ''...दिमाग की खिड़कियाँ खुली रखो, अगर साम्राज्य को बचाये रखना चाहते हो तो।''[21] भीष्म जी ने यह सन्देश पूरे भारतवासियों के सामने रखा है। हमें हर पल सतर्क रहना चाहिए ताकि फिर से भारत को गुलामी से बचा सकें। इसमें भीष्म जी ने दो हिन्दुस्तानी-एक राय साहब और दूसरा खान बहादुर का चित्रण भी किया गया है जो अंग्रेज़ी अफसरों के साथ मिलकर अपने देश के विरुद्ध काम करते हैं। देशस्नेहियों की हीनता को दिखाकर देशरक्षा और स्वतन्त्रता की महनीयता को यहाँ उजागर किया गया है।

भीष्म जी ने इर्विंग के जरिए वर्तमान समय के शासकों के वास्तविक यथार्थ को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इर्विंग बाथुर से कहता है कि– ''कोई भी सत्ताधारी इन्सान हमदर्दी को प्राथमिकता नहीं देगा...। कभी-कभी रियाया को चुप कराने और उसे थपथपाने के लिए इन्सानी हमदर्दी का ढोंग रचा जाता है, ताकि उसका सहयोग मिलता रहे...। सत्ताधारी सेवा इसलिए करता है कि उसकी ताकत बढ़े। उन्हें और ज्यादा काबू में कर सके।''[22] जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हमें शासन को सुव्यवस्थित बनाने की कोशिश करनी चाहिए। यह राष्ट्रहित के लिए जरूरी है।

आज हम भूमंडलीकरण के कारण परोक्ष रूप से विदेशी शक्तियों के गुलाम हैं। इस गुलामी से राष्ट्र को मुक्ति दिलाना भी राष्ट्र के नागरिकों का कर्तव्य है। इसलिए हमें हर तरह के खतरों से वाकिफ रहना चाहिए। भीष्म साहनी ने इर्विंग के जरिए मानवता के सामने सोचने लायक अनेक मुद्दों को उठाया है। राष्ट्र को हर प्रकार के खतरों से बचाने की यह कोशिश राष्ट्रवादी भावना के तहत आने वाली है। इस प्रकार राष्ट्रवाद की दृष्टि में ''रंग दे बसन्ती चोला'' नाटक भारतीयों के मन में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने का एक सफल प्रयास है।

सन्दर्भ

1. भारतीय राष्ट्रवाद और प्रेमचन्द, जितेन्द्र श्रीवास्तव, पृ. 18
2. वही, पृ. 18
3. रंग दे बसन्ती चोला, भीष्म साहनी, पृ. 9
4. वही, पृ. 10
5. वही, पृ. 10
6. वही, पृ. 33

7. वही, पृ. 30
8. वही, पृ. 43
9. वही, पृ. 47
10. वही, पृ. 21
11. वही, पृ. 23
12. वही, पृ. 24
13. वही, पृ. 24
14. वही, पृ. 28
15. वही, पृ. 19
16. वही, पृ. 19
17. वही, पृ. 17
18. वही, पृ. 17
19. वही, पृ. 86
20. वही, पृ. 85
21. वही, पृ. 41
22. वही, पृ. 67